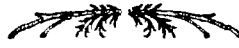


\* श्रीनेमिनाथाय नमः \*

# जिनवाणी संग्रह

अर्थात्

बृहद् जैन सिद्धान्त संग्रह ।



सम्पादक—

व्याकरण रत्न, पं० सतीशचन्द्र जैन, न्यायतीर्थ ।

पं० कस्तूरचंद्र छावड़ा “विशारद”

.....

प्रकाशक—

दुलीचंद्र पन्नालाल, परिवार

मालिक—जिनवाणी प्रचारक कार्यालय,

बड़ाबाजार, कलकत्ता ।

द्वितीय संस्करण १५०० } दीपावली २४५२ { मूल्य सवा दो रुपया ।